चिकित्सीय आपातकाल/एम्बुलेंस सेवा के लिए कृपया 112 पर डायल करें।

अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 संख्या 239 श्री विजय पुरम, रविवार, 06 सितम्बर 2026 web: dt.andamannicobar.gov.in 2.00 रूपए

भारत की माननीय राष्ट्रपति ने शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए

देश के विकास में शैक्षणिक उत्कृष्टता, कौशल विकास और उद्यमिता का बहुत महत्व है: माननीय राष्ट्रपति

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

भारत की माननीय राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने आज, 5 सितंबर 2026 को शिक्षक दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में देशभर के शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए।

इस अवसर पर अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने कहा कि शिक्षा हमारे संविधान में निहित, 'अवसर की समानता' के आदर्श को कार्यरूप देने का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ाई बीच में छोड़ने की दर के नगण्य हो जाने की उपलबधि शिक्षकों के प्रयासों से हासिल हो सकी है। उन्होंने इस राष्ट्रीय सफलता के लिए सभी शिक्षकों की सराहना की।

राष्ट्रपति ने कहा कि स्कूली शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था का आधार है। ज्ञान और कौशल तो कभी भी प्राप्त किए जा सकते हैं, परंतु बचपन में ही सदाचार की शिक्षा देना, अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के बौद्धिक, शारीरिक और नैतिक विकास पर निष्ठापूर्वक ध्यान देकर हमारे शिक्षक, अच्छे विद्यार्थियों और कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों की भावी पीढ़ियां तैयार कर सकते हैं।

राष्ट्रपति ने इस बात का उल्लेख किया कि अनेक विद्यार्थी, आर्थिक .ष्टि से कमजोर परिवारों से आते हैं; कुछ अपने परिवार में पहली पीढ़ी के विद्यार्थी होते हैं; कुछ विद्यार्थी गांव के किसी सामान्य स्कूल से शहर के बड़े स्कूल में आते हैं; कुछ विद्यार्थी स्वभाव से ही संकोची होते हैं; कुछ विद्यार्थियों में बहुत प्रतिभा होती है लेकिन उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है; तथा कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिनकी विशेष जरूरतें होती हैं। ऐसे सभी विद्यार्थी, जो किसी कारण से, कोई कमी महसूस करते हैं, उनमें आत्मविश्वास जगाना, और उन्हें आगे बढ़ाना, शिक्षकों का विशेष दायित्व है।

राष्ट्रपति ने कहा कि देश के विकास में शैक्षणिक उत्कृष्टता, कौशल विकास और उद्यमिता का बहुत महत्व है। भारत को ज्ञान की महाशक्ति बनाने के साथ–साथ विश्व के कौशल–केन्द्र के रूप में स्थापित करना, हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में शामिल है।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के मध्योत्तर अण्डमान के मायाबंदर स्थित पीएम श्री राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक श्री जे. प्रकाश राव को भारत की माननीय राष्ट्रपति द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के रूप में सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति ने कहा कि हम सभी देशवासी, विकसित भारत के निर्माण के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं। विश्वस्तरीय शिक्षा व्यवस्था के बल पर ही, विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है। हमारे शिक्षक, शिक्षा व्यवस्था में प्राण–वायु का संचार करते हैं। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हमारे देश में एक भी विद्यार्थी, अच्छी शिक्षा के अवसरों से वंचित न रहे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमारे शिक्षक, अपने स्नेह और समर्पण से, सभी विद्यार्थियों में ज्ञान, प्रेरणा, नैतिकता और संवेदनशीलता का संचार करें।

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 में युवाओं की व्यापक भागीदारी की अपील

विकसित भारत क्विज़ युवाओं के लिए विकसित भारत@2047 के लिए अपने विचार साझा करने का मार्ग खोलेगा

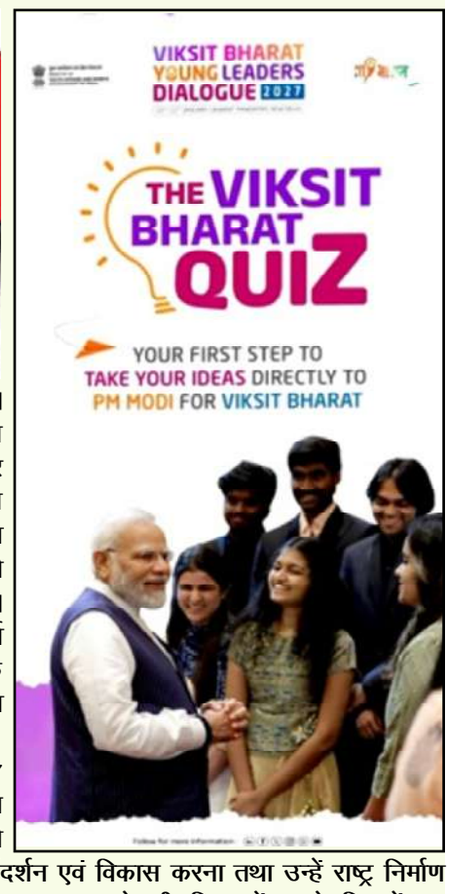

श्री विजय पुरम, 5 सितंबर।

भारत सरकार के युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय के माई भारत, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह ने द्वीपसमूह के युवाओं से अपील की है कि वे विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 में बड़ी संख्या में भाग लें। इसकी शुरुआत विकसित भारत क्विज़ से होगी। युवाओं से अपने विचारों, सुझावों और नवाचारपूर्ण समाधानों को विकसित भारत @2047 के लक्ष्य की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देने का आह्वान किया गया है।

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पहल है, जिसका उद्देश्य विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले प्रतिभाशाली युवा भारतीयों की पहचान करना, उनका मार्गदर्शन एवं विकास करना तथा उन्हें राष्ट्र निर्माण और वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में अपने विचारों का योगदान देने के लिए राष्ट्रीय मंच प्रदान करना है।

शेष पृष्ठ 4 पर

अण्डमान तथा निकोबार ने आरईएससीओ मॉडल के तहत 20 एमडब्ल्यूएच बीईएसएस परियोजना के लिए निविदाएं आमंत्रित कीं

श्री विजय पुरम, 5 सितंबर।

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के विद्युत विभाग ने आरईएससीओ मॉडल के तहत अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के डॉलीगंज में 20 एमडब्ल्यूएच ग्रिड से जुड़ी बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (बीईएसएस) विकसित करने के लिए निविदा जारी की है।

बीईएसएस परियोजना में दो उप–प्रणालियां शामिल होंगी। इनमें से एक की क्षमता 4 एमडब्ल्यूएच/4 एमडब्ल्यूएच (ईएसएस–1) होगी, जो ग्रिड स्थिरता सहायता संबंधी कार्यों के लिए होगी, जबकि दूसरी की क्षमता 4 एमडब्ल्यूएच/16 एमडब्ल्यूएच (ईएसएस–2) होगी, जो विद्युत के भंडारण और आपूर्ति के लिए होगी। ईएसएस–1 और ईएसएस–2 दोनों की स्थापना मिलकर एक परियोजना का गठन करेगी और यह परियोजना एक ही बीईएसएस डेवलपर (बीईएसएसडी) के कार्यक्षेत्र में होगी।

परियोजना को निर्माण, स्वामित्व एवं संचालन (बीओओ) मॉडल के तहत विकसित किया जाना होगा तथा इसमें 12 वर्षों के लिए व्यापक संचालन एवं रखरखाव (ओ एंड एम) को शामिल करना होगा। परियोजना की सांकेतिक पूंजीगत लागत 60 करोड़ रुपये है।

निविदादाताओं को 1.20 करोड़ रुपये की बयाना राशि जमा (ईएमडी) करनी होगी। चयनित निविदादाता को 3 करोड़ रुपये की निष्पादन बैंक गारंटी (पीबीजी) जमा करनी होगी।

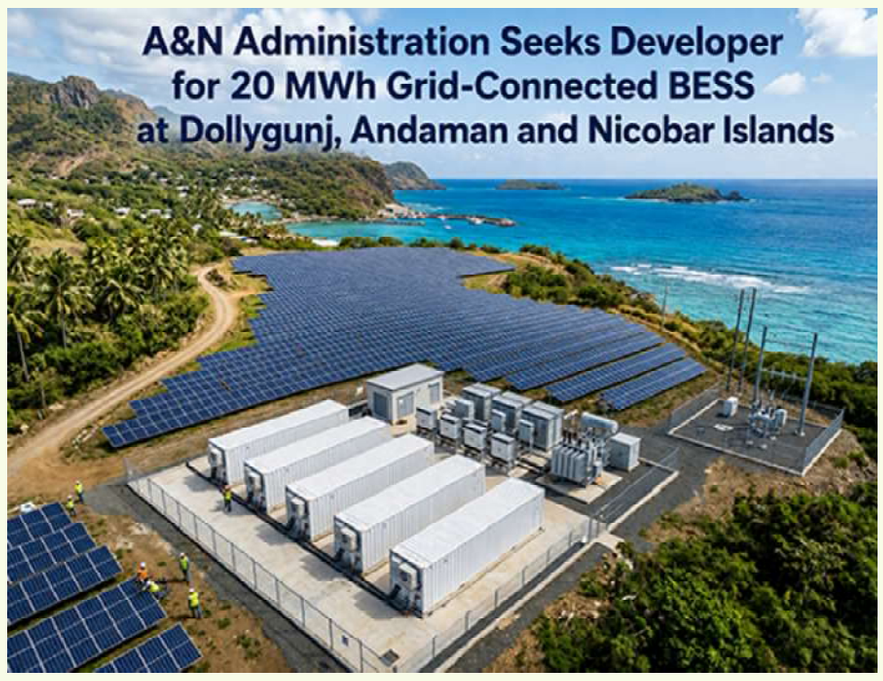

निविदाएं जमा करने की अंतिम तिथि 29 सितंबर, 2026 है। तकनीकी–वाणिज्यिक निविदाएं 30 सितंबर, 2026 को खोली जाएंगी।

20 एमडब्ल्यूएच बीईएसएस की कुल परियोजना क्षमता अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के श्री विजय पुरम स्थित डॉलीगंज में एनएलसी इंडिया के 20 मेगावाट सौर फोटोवोल्टिक (एसपीवी) संयंत्र के परिसर में स्थापित की जानी है।

बीईएसएसडी को वार्षिक आधार पर न्यूनतम 95 प्रतिशत प्रणाली उपलब्धता की गारंटी देनी होगी। बीईएसएसडी को मासिक आधार पर प्रणाली की एसी–से–एसी राउंड–ट्रिप दक्षता (आरटीई) 85 प्रतिशत होने की भी गारंटी देनी होगी।

निविदादाता की कुल संपत्ति (नेट वर्थ) वित्तीय वर्ष 2025–26 की अंतिम तिथि तक अथवा निविदा जमा करने की अंतिम तिथि से कम से कम सात दिन पहले के दिन, न्यूनतम 10 करोड़ रुपये होनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त, निविदादाता को निम्नलिखित में से कम से कम एक मानदंड पूरा करके पर्याप्त वित्तीय क्षमता प्रदर्शित करनी होगी: वित्तीय वर्ष 2025–26 में 5.20 करोड़ रुपये का वार्षिक कारोबार, कम से कम 1.04 करोड़ रुपये का मूल्यह्रास, ब्याज एवं कर पूर्व लाभ (पीबीडीआईटी), अथवा परियोजना की कार्यशील पूंजी संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बैंक/वित्तीय संस्था से 1.30 करोड़ रुपये की सैद्धांतिक ऋण सीमा। (स्रोत:energetica-india.net)

चिड़ियाटापू में खुले समुद्र में पिंजरा मत्स्य पालन परियोजनाओं की मत्स्य विभाग के सचिव ने समीक्षा की

श्री विजय पुरम, 5 सितंबर।

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के मत्स्य विभाग के सचिव ने मत्स्य विभाग के अधिकारियों के साथ दक्षिण अण्डमान के चिड़ियाटापू का दौरा किया। इस दौरान द्वीपसमूह में चल रही वाणिज्यिक खुले समुद्र में पिंजरा मत्स्य पालन परियोजनाओं की समीक्षा की गई तथा निजी कंपनियों द्वारा कार्यान्वित की जा रही समुद्री जलीय कृषि पहलों की प्रगति का आकलन किया गया।

वर्तमान में दो फर्म, अर्थात् मैसर्स एक्वा वर्ल्ड एक्सपोर्ट्स और मैसर्स कैनारेस एक्वाकल्चर एलएलपी, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के मत्स्य विभाग द्वारा आवंटित पट्टे पर दिए गए समुद्री क्षेत्र में चिड़ियाटापू में पिंजरा मत्स्य पालन गतिविधियां संचालित कर रही हैं। इन गतिविधियों को द्वीपसमूह में समुद्री जलीय कृषि को बढ़ावा देने, मत्स्य गतिविधियों में विविधता लाने तथा समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग के उद्देश्य से शुरू किया गया है। पिंजरा मत्स्य

शेष पृष्ठ 4 पर

अण्डमान तथा निकोबार आबकारी नीति, 2013 में संशोधन

श्री विजय पुरम, 5 सितंबर।

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन ने हाल ही में लाइसेंस प्रदान करने और मदिरा ब्रांड पंजीकरण की प्रक्रिया को सरल एवं सुव्यवस्थित करने, पारदर्शिता बढ़ाने, कारोबार करने में सुगमता को बढ़ावा देने तथा डिजिटल मंच के माध्यम से आवेदनों का समयबद्ध निपटान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अण्डमान तथा निकोबार आबकारी नीति, 2013 में संशोधन किया है। संशोधनों के तहत कई महत्वपूर्ण उपाय किए गए हैं, जिनमें निर्दिष्ट आबकारी लाइसेंसों की वैधता अवधि को तीन वर्ष तक बढ़ाना, मदिरा ब्रांडों के पंजीकरण के लिए पात्रता मानदंड लागू करना तथा आवेदनों के समयबद्ध प्रसंस्करण का प्रावधान शामिल है। इन उपायों का उद्देश्य आबकारी संबंधी सेवाओं के लिए अधिक पारदर्शी, कुशल और सुव्यवस्थित व्यवस्था प्रदान करना तथा हितधारकों को अधिक सुविधा उपलब्ध कराना है।

इसके अतिरिक्त, अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के आबकारी विभाग ने मदिरा ब्रांड पंजीकरण के लिए ऑनलाइन पोर्टल शुरू किया है, जो अब मदिरा ब्रांड पंजीकरण से संबंधित आवेदनों को ऑनलाइन जमा करने और उनके प्रसंस्करण के लिए सक्रिय एवं कार्यरत है। सभी संबंधित हितधारकों से अनुरोध किया गया है कि वे आबकारी विभाग के आधिकारिक पोर्टल **https://excise.andamannicobar.gov.in** के माध्यम से उपलब्ध ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग करें। नव शुरू किया गया पोर्टल निर्माताओं, वितरकों, लाइसेंसधारियों और अन्य पात्र हितधारकों के लिए मदिरा ब्रांड पंजीकरण से संबंधित आवेदन जमा करने तथा सेवाओं का लाभ उठाने हेतु एक सुविधाजनक, उपयोगकर्ता–अनुकूल और पारदर्शी

शेष पृष्ठ 4 पर

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद

पृष्ठ 1 का शेष

यह कार्यक्रम चयनित युवाओं को एक सुव्यवस्थित, पारदर्शी और योग्यता–आधारित चयन प्रक्रिया के माध्यम से आगे बढ़ने का अनूठा अवसर प्रदान करता है। अंततः वे नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद तक पहुंचेंगे, जहां उत्कृष्ट युवा नेताओं को नीति–निर्माताओं, विषय विशेषज्ञों, केंद्रीय मंत्रियों और देश के प्रतिष्ठित नेताओं के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा। चयनित अंतिम प्रतिभागियों को माननीय प्रधानमंत्री के समक्ष भी अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त होगा।

विकसित भारत क्विज़–विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 की दिशा में पहला कदम

विकसित भारत क्विज़, प्रमुख विकसित भारत चुनौती चरण की पहली अवस्था है, जिसका आयोजन 17 अगस्त से 30 सितंबर, 2026 तक माई भारत पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन किया जा रहा है।

यह क्विज़ 15–29 वर्ष आयु वर्ग के युवा भारतीयों के लिए खुली है और इसे कई भाषाओं में डिजिटल माध्यम से आयोजित किया जाएगा। इससे देशभर के युवाओं को, जिसमें अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के सुदूरतम द्वीपों के युवा भी शामिल हैं, इसमें भाग लेने का अवसर मिलेगा।

निर्धारित चयन मानदंडों के अधीन, उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी अगले चरण–विकसित भारत निबंध चुनौती–के लिए अर्हता प्राप्त करेंगे। इसमें चयनित युवाओं को विकसित भारत के दृष्टिकोण से संबंधित निर्धारित विषयों पर 500 शब्दों का निबंध प्रस्तुत करना होगा।

क्विज़ से राष्ट्रीय संवाद तक का सफर

विकसित भारत चुनौती के अंतर्गत एक व्यापक पांच–चरणीय प्रक्रिया अपनाई जाएगी:

विकसित भारत क्विज़–निबंध चुनौती–ज़िला चैंपियनशिप–राज्य/केंद्र शासित प्रदेश स्तर का विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद–राष्ट्रीय विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद

ज़िला स्तर पर चयनित प्रतिभागियों को एक निर्णायक मंडल के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा। इसके बाद उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले युवा प्रतियोगिता के उच्चतर चरणों में अपने–अपने राज्य/केंद्र शासित प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

छह प्रमुख क्षेत्र

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 युवाओं को छह प्रमुख क्षेत्रों के माध्यम से अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता और नवाचारपूर्ण विचारों को प्रदर्शित करने के अनेक अवसर प्रदान करेगा:

1. विकसित भारत चुनौती
2. सांस्कृतिक क्षेत्र–लोक नृत्य, लोक गीत, चित्रकला, वक्तृत्व एवं कविता लेखन
3. भारत के लिए डिज़ाइन
4. सामाजिक सरोकार के लिए हैक
5. युवा उद्यमी चुनौती
6. युवा संसद

इस पहल में 10–क्षेत्रीय रूपरेखा पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा, जिसमें भविष्य का शासन, जलवायु सुरक्षा, जनसांख्यिकीय लाभांश, सतत औद्योगिकीकरण, संपर्क सुविधा, विनिर्माण, जनजातीय नेतृत्व, नवाचार, अग्रणी प्रौद्योगिकी और नीली अर्थव्यवस्था जैसी महत्वपूर्ण विकास प्राथमिकताएं शामिल हैं।

महत्वपूर्ण तिथियां

- विकसित भारत क्विज़: 17 अगस्त–30 सितंबर, 2026
- विकसित भारत निबंध चुनौती: 5–19 अक्टूबर, 2026
- ज़िला चैंपियनशिप: 10–16 नवंबर, 2026
- राज्य/केंद्र शासित प्रदेश विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद: 17 नवंबर–7 दिसंबर, 2026
- राष्ट्रीय विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद, नई दिल्ली: 10–12 जनवरी, 2027

विकसित भारत क्विज़ 2027 में कैसे भाग लें

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद (वियूवानेसं) 2027

वियूवानेसं क्विज़ 2027–भाग लेने की प्रक्रिया

प्रत्यक्ष क्विज़ लिंक:

विकसित भारत @2047 के लिए अपने विचार साझा करने की दिशा में पहला कदम उठाएं!

चरण 1–माई भारत पोर्टल खोलें

माई भारत पोर्टल पर जाएं।

चरण 2–विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 पॉप–अप पर क्लिक करें

माई भारत पोर्टल खोलने के बाद स्क्रीन पर दिखाई देने वाले विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 पॉप–अप पर क्लिक करें। इससे प्रतिभागी विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 स्थिर पृष्ठ पर पहुंच जाएंगे।

चरण 3–"क्विज़ में भाग लें" पर क्लिक करें

विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 पृष्ठ पर "क्विज़ में भाग लें" बटन पर क्लिक करके क्विज़ पृष्ठ पर जाएं।

चरण 4–निर्देश ध्यानपूर्वक पढ़ें

आगे बढ़ने से पहले प्रतिभागियों को क्विज़ से संबंधित सभी जानकारी और निर्देश ध्यानपूर्वक पढ़ने की सलाह दी जाती है।

चरण 5–"क्विज़ शुरू करें" पर क्लिक करें

निर्देश पढ़ने के बाद "क्विज़ शुरू करें" पर क्लिक करें।

चरण 6–पंजीकरण/लॉगिन करें

"क्विज़ शुरू करने के लिए पंजीकरण/लॉगिन करें" पर क्लिक करें। जो युवा पहले से माई भारत पोर्टल पर पंजीकृत नहीं हैं, उन्हें पहले अपना पंजीकरण पूरा करना होगा।

चरण 7–अपने विवरण सत्यापित करें

लॉगिन करने के बाद "क्विज़ शुरू करें" पर क्लिक करें और स्क्रीन पर प्रदर्शित सभी विवरणों को ध्यानपूर्वक सत्यापित करें।

चरण 8–रेफरल कोड दर्ज़ करें

जिन प्रतिभागियों के पास रेफरल कोड है, वे उसे निर्धारित स्थान पर दर्ज़ कर सकते हैं।

चरण 9–अपनी पसंदीदा भाषा चुनें

"आगे बढ़ें" पर क्लिक करें और क्विज़ में भाग लेने के लिए अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें।

चरण 10–क्विज़ शुरू करें

"क्विज़ शुरू करें" पर क्लिक करें और प्रश्नों के उत्तर देना शुरू करें।

चरण 11–क्विज़ जमा करें और प्रतिक्रिया दें

क्विज़ पूरा करने के बाद उसे जमा करें और अपनी प्रतिक्रिया प्रदान करें।

क्विज़ पूरा करने के बाद:

- क्विज़ जमा करें,
- अंक/परिणाम देखें,
- रेटिंग और प्रतिक्रिया दें, और
- प्रक्रिया पूरी करने के लिए "जमा करें" पर क्लिक करें।

चरण 12–प्रमाण–पत्र डाउनलोड करें

प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी होने के बाद भागीदारी का प्रमाण–पत्र जारी किया जाएगा। प्रतिभागी अपना प्रमाण–पत्र डाउनलोड कर सकते हैं और अपनी उपलब्धि साझा कर सकते हैं।

व्यापक भागीदारी की अपील

सुख रंजन बिस्वास, यूटी निदेशक, माई भारत, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह ने द्वीपसमूह के सभी पात्र युवाओं से विकसित भारत क्विज़ 2027 में उत्साहपूर्वक भाग लेने की अपील की है।

उन्होंने कहा कि "अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के युवाओं में अपार प्रतिभा, रचनात्मकता और नेतृत्व क्षमता है। विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2027 उन्हें अपने विचार व्यक्त करने और विकसित भारत/2047 के दृष्टिकोण में योगदान देने के लिए एक उल्लेखनीय राष्ट्रीय मंच प्रदान करता है। उन्होंने 15 से 29 वर्ष की आयु के सभी पात्र युवाओं से अपील की हैं कि वे विकसित भारत क्विज़ में उत्साहपूर्वक भाग लें और इस परिवर्तनकारी राष्ट्रीय यात्रा का हिस्सा बनने की दिशा में पहला कदम उठाएं।"

माई भारत, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह ने सभी पात्र युवाओं, विद्यार्थियों, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों, राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेटों, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, नेहरू युवा केंद्र संगठन के युवा क्लबों, शैक्षणिक संस्थानों, युवा संगठनों तथा युवाओं के साथ कार्य करने वाले सभी हितधारकों से पर्याप्त जागरूकता एवं प्रचार–प्रसार गतिविधियां संचालित करने और अधिक से अधिक युवाओं को विकसित भारत क्विज़ 2027 में भाग लेने के लिए प्रेरित करने की अपील की है।

यह पहल द्वीपसमूह के युवाओं को राष्ट्रीय मंच पर अपने ज्ञान, नेतृत्व क्षमता, रचनात्मकता और नवाचारपूर्ण विचारों को प्रदर्शित करने तथा विकसित भारत/2047 के निर्माण की दिशा में सार्थक योगदान देने का ऐतिहासिक अवसर प्रदान करती है।

आपके विचार–आपकी आवाज़–आपका नेतृत्व–भारत का भविष्य आज ही भाग लें–विकसित भारत के कल को आकार दें!

जारीकर्ता:

माई भारत, अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह

युवा मामले एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार

श्री विजय पुरम

जारावा विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह के बीच सतत घरेलू कुक्कुट पालन को बढ़ावा देने की पहल

श्री विजय पुरम, 5 सितंबर।

जारावा विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (पीवीटीजी) के बीच सतत घरेलू कुक्कुट पालन और पोषण संबंधी सहायता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण पहल के तहत, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग ने पहली बार 3 सितंबर, 2026 को डॉलीगंज स्थित सरकारी कुक्कुट फार्म से जारावा समुदाय को 200 देशी निकोबारी मुर्गियां वितरित कीं।

इन पक्षियों को जारावा समुदाय के बीच आगे वितरण के लिए कदमतला के जनजातीय कल्याण अधिकारी श्री अश्वथ को सौंपा गया। विभाग द्वारा यह संपूर्ण वितरण 100 प्रतिशत अनुदान के तहत किया गया है।

निकोबारी मुर्गी का विशेष रूप से चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यह अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह का देशी कुक्कुट आनुवंशिक संसाधन है और यहां की गर्म एवं आर्द्र जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल है। मजबूत एवं सहनशील घरेलू पक्षी होने के कारण यह अपेक्षाकृत कम लागत वाली परिस्थितियों में पालन के लिए उपयुक्त है और स्थानीय रूप से उपलब्ध आहार संसाधनों का उपयोग कर सकती है। ये पक्षी घरेलू उपभोग के लिए अंडे और मांस, दोनों उपलब्ध करा सकते हैं।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस पहल का उद्देश्य समुदाय में पक्षियों को घरेलू रूप से पालने की भावना विकसित करना तथा उन्हें अंडे और मांस के लिए मुर्गियों का पालन करना सिखाना है। यह प्रायोगिक कार्यक्रम जारावा समुदाय के बीच घरेलू कुक्कुट पालन की अनुकूलता और स्वीकार्यता का आकलन करने तथा ताजे अंडों एवं कुक्कुट मांस की उपलब्धता के माध्यम से अतिरिक्त पोषण उपलब्ध कराने की इसकी संभावनाओं का पता लगाने में भी सहायता करेगा।

शहीद द्वीप में समुद्री डीज़ल इंजन एवं मछली पकड़ने के जाल की मरम्मत पर प्रशिक्षण संचालित

श्री विजय पुरम, 5 सितंबर।

अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के मत्स्य विभाग ने दक्षिण अण्डमान ज़िले के लिए कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (एटीएमए) की ज़िला कार्य योजना (डीएपी) 2026–27 के तहत 4 एवं 5 सितंबर, 2026 को प्रोथरापुर खंड के अंतर्गत शहीद द्वीप स्थित मत्स्य अवतरण केंद्र में 'समुद्री डीज़ल इंजनों की मरम्मत एवं रखरखाव' तथा 'मछली पकड़ने के जाल की मरम्मत एवं जाल की सिलाई' विषयों पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम का समन्वय मत्स्य उप–निरीक्षक श्री अब्दुल आरिफ ने किया। मत्स्य विभाग के पूर्व अफ्लोट अनुभाग अधिकारी श्री श्री नारायण ने सागर मित्र के साथ संसाधन व्यक्ति के रूप में तकनीकी सहयोग प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को मछली पकड़ने वाली नौकाओं में उपयोग किए जाने वाले समुद्री डीज़ल इंजनों के नियमित रखरखाव, बुनियादी मरम्मत, खराबियों की पहचान एवं समाधान तथा सुरक्षित संचालन के संबंध में व्यावहारिक प्रदर्शन और मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार प्रतिभागियों को मछली पकड़ने के जाल की मरम्मत एवं सिलाई का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया, जिसमें क्षतिग्रस्त हिस्सों की पहचान, जाल की मरम्मत की बुनियादी तकनीक तथा मछली पकड़ने के उपकरणों के उचित रखरखाव को शामिल किया गया। प्रशिक्षण पूरा होने पर सभी 20 प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए गए। साथ ही, इंजन के रखरखाव और जाल की मरम्मत संबंधी गतिविधियों के दौरान सुरक्षित कार्य पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए चश्मे और हाथ के दस्ताने जैसी आवश्यक सुरक्षा एवं कार्य सामग्री भी प्रदान की गई।

स्वराज द्वीप में दुर्घटना में घायल कुत्ते की जटिल हड्डी संबंधी शल्य चिकित्सा सफलतापूर्वक की गई

श्री विजय पुरम, 5 सितंबर।

स्वराज द्वीप स्थित पशु चिकित्सा औषधालय में वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी एवं उनकी टीम द्वारा एक कुत्ते पर जटिल अस्थि–चिकित्सकीय शल्य प्रक्रिया सफलतापूर्वक की गई। यह कुत्ता एक वाहन दुर्घटना के बाद कई हड्डियों में फ्रैक्चर होने से घायल हो गया था। दुर्घटना के बाद कुत्ते को पशु चिकित्सा औषधालय लाया गया। चोटों की प्रकृति को देखते हुए, टूटी हुई हड्डियों को स्थिरता प्रदान करने और उनके उचित रूप से जुड़ने में सहायता के लिए शल्य चिकित्सा की गई। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार सामान्य बेहोशी के तहत, दोनों फ्रैक्चर को रेट्रोग्रेड और नॉर्मोग्रेड इंट्रामेडुलरी पिनिंग तकनीक का उपयोग करके सफलतापूर्वक स्थिर किया गया।

यह पशु चिकित्सा अस्थि–शल्य चिकित्सा में फ्रैक्चर को आंतरिक रूप से स्थिर करने की एक स्थापित पद्धति है। स्थिरीकरण के बाद प्रभावित अंगों को उचित सहायक पट्टी बांधकर और अधिक स्थिर किया गया। पशु ने इस प्रक्रिया को अच्छी तरह सहन किया और उसे शल्य चिकित्सा के बाद की देखभाल एवं निगरानी में रखा गया है।

मौसम संबंधी पूर्वानुमान

श्री विजय पुरम, 5 सितंबर।

आपदा प्रबंधन निदेशालय की ओर से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि 6, 7, 8, 9, 10 एवं 11 सितंबर को अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में एक या दो स्थानों पर 30–40 किमी प्रति घंटे की गति तक पहुंचने वाली तेज हवाओं के साथ गरज–चमक एवं बिजली गिरने की बहुत अधिक संभावना है।

चिड़ियाटापू में खुले समुद्र में पिंजरा मत्स्य पालन

पृष्ठ 1 का शेष

पालन परियोजना में खुले समुद्र में पिंजरा मत्स्य पालन प्रणाली के तहत 10 मीटर व्यास वाले उच्च घनत्व पॉलीएथिलीन (एचडीपीई) के गोलाकार पिंजरों का उपयोग किया जा रहा है। कुल 8 पिंजरे उपलब्ध हैं। इस पालन गतिविधि का मुख्य उद्देश्य एशियाई सीबास (बारामुंडी) का पालन करना है, जो व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण समुद्री पंखयुक्त मछली प्रजाति है।

दौरे के दौरान सचिव ने फर्म द्वारा अपनाई जा रही मछली संचयन, वृद्धि, आहार देने तथा पिंजरा प्रबंधन संबंधी प्रक्रियाओं की समीक्षा की। परियोजना की शुरुआत 30 मई, 2026 को लगभग 20,000 एशियाई सीबास के मत्स्य शिशुओं को प्रारंभिक रूप से डालने के साथ हुई थी, जिनका प्रारंभिक आकार लगभग 1.5 इंच (लगभग 0.4 ग्राम) था। वर्तमान में मछलियों ने लगभग 150 ग्राम का औसत शारीरिक वजन प्राप्त कर लिया है। मछलियों को उच्च प्रोटीन और उच्च वसा वाला आहार दिया जा रहा है तथा वर्तमान में प्रतिदिन लगभग 20 किलोग्राम आहार की आवश्यकता है। पहली खेप के अप्रैल, 2027 तक मत्स्य–उत्पादन के लिए तैयार होने की उम्मीद है, जो मछलियों की वृद्धि और पालन की परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। परियोजना के सफल कार्यान्वयन से अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में खुले समुद्र में पिंजरा मत्स्य पालन को एक व्यवहार्य समुद्री जलीय कृषि गतिविधि के रूप में प्रदर्शित करने तथा सतत समुद्री जलीय कृषि में अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने की उम्मीद है।

मत्स्य विभाग के सचिव ने पिंजरा प्रबंधन के परिचालन पहलुओं की भी समीक्षा की, जिसमें मछलियों की वृद्धि, आहार देने की प्रक्रियाएं, मछली भंडार का रखरखाव तथा स्थल का समग्र प्रबंधन शामिल है। विभाग ने उचित संचयन घनत्व बनाए रखने, मछलियों के स्वास्थ्य एवं वृद्धि की नियमित निगरानी, वैज्ञानिक तरीके से आहार देने की प्रक्रियाओं, पिंजरों के रखरखाव तथा निर्धारित पर्यावरणीय एवं जैव–सुरक्षा उपायों का पालन करने के महत्व पर ज़ोर दिया।

मत्स्य विभाग द्वीपसमूह में मछली उत्पादन बढ़ाने, मत्स्य क्षेत्र से जुड़े हितधारकों के लिए आजीविका के अवसरों में सुधार करने तथा जंगली समुद्री मत्स्य संसाधनों पर दबाव कम करने के उद्देश्य से समुद्री जलीय कृषि गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है। चिड़ियाटापू में खुले समुद्र में पिंजरा मत्स्य पालन की पहल समुद्री जलीय कृषि क्षेत्र को मजबूत करने तथा द्वीपसमूह में प्रौद्योगिकी आधारित और सतत जलीय कृषि पद्धतियों की संभावनाओं को प्रदर्शित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार मत्स्य विभाग खुले पिंजरा मत्स्य पालन और समुद्री शैवाल की खेती के रूप में समुद्री जलीय कृषि को बढ़ावा देने के लिए और अधिक स्थलों के आवंटन की प्रक्रिया में है। इसमें सतत उत्पादन, पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी तथा मत्स्य क्षेत्र के दीर्घकालिक विकास पर विशेष ज़ोर दिया जा रहा है। यह दौरा मुख्य सचिव द्वारा सचिवों और निदेशकों को जारी नवीनतम निर्देश के अनुपालन में किया गया, जिसमें उन्हें नियमित रूप से क्षेत्रीय दौरे करने के निर्देश दिए गए हैं।

अण्डमान तथा निकोबार आबकारी नीति

पृष्ठ 1 का शेष

डिजिटल मंच उपलब्ध कराता है। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार संशोधित आबकारी नीति और ऑनलाइन पोर्टल का संयुक्त कार्यान्वयन अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में आबकारी प्रशासन के आधुनिकीकरण तथा सेवाओं की डिजिटल आपूर्ति को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

स्मार्ट मीटर में लाल, हरी और पीली लाइट का क्या मतलब होता है? जानें क्या है इनका काम

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

आजकल कई घरों में पुराने बिजली मीटर की जगह स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं. इन मीटरों में बिजली की खपत और कनेक्शन से जुड़ी जानकारी डिजिटल तरीके से मिलती है. स्मार्ट मीटर पर अलग–अलग रंगों की लाइट भी दिखाई देती हैं जिन्हें देखकर कई लोग परेशान हो जाते हैं कि कहीं मीटर में कोई खराबी तो नहीं है. दरअसल, लाल, हरी और पीली लाइट अलग–अलग कंडिशन या एक्टिविटी का संकेत देती हैं.

आपको बता दें कि स्मार्ट मीटर पर लाल लाइट दिखाई देना अक्सर बिजली की खपत या मीटर के एक्टिव होने से जुड़ा होता है. कई मीटरों में लाल LED बिजली की यूनिट खर्च होने की स्पीड के अनुसार ब्लिंक करती है. यानी घर में जितने ज्यादा बिजली वाले डिवाइस चलेंगे, लाइट उतनी तेजी से ब्लिंक करती है.

कुछ मॉडलों में लाल लाइट किसी अलर्ट, बिजली कटने या मीटर से जुड़ी कंडिशन का संकेत भी होता है. इसलिए केवल लाल लाइट देखकर यह मान लेना सही नहीं है कि मीटर खराब हो गया है. हरी लाइट नॉर्मली मीटर और बिजली सप्लाई की नॉर्मल कंडिशन को दर्शाती है. कई स्मार्ट मीटर में हरी LED का मतलब होता है कि मीटर को बिजली मिल रही है और कनेक्शन नॉर्मल तरीके से काम कर रहा है. अगर हरी लाइट लगातार या नॉर्मल तरीके से जल रही है तो आमतौर पर घबराने की जरूरत नहीं होती है.

पीली या एम्बर लाइट अक्सर वॉर्निंग की तरफ इशारा करती है. जैसे ये कम बैलेंस, कम वोल्टेज, कनेक्शन संबंधी

समस्या या मीटर के किसी अलर्ट से जुड़ी हो सकती है. लेकिन यहां सबसे जरूरी बात ये है कि पीली लाइट का मतलब हर स्मार्ट मीटर में एक जैसा नहीं होता है. सही जानकारी के लिए मीटर के मॉडल की गाइड या अपनी बिजली डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के निर्देश देखना बेहतर रहता है.

आपकी जानकारी के लिए बता दें कि Smart Meter की LED का तेजी से ब्लिंक करना हमेशा खराबी का संकेत नहीं होता है. कई मीटरों में LED की ब्लिंकिंग डॉयरेक्ट बिजली की खपत से जुड़ी होती है. जैसे अगर घर में AC, गीजर, मोटर या हीटर जैसे ज्यादा बिजली खपत करने वाले डिवाइस चल रहे हैं तो मीटर की खपत वाली LED ज्यादा तेजी से चमक सकती है. डिवाइस बंद करने पर इसकी स्पीड कम हो जाती है.

अगर स्मार्ट मीटर पर कोई अजीब संकेत लगातार दिखाई दे, डिस्प्ले बंद हो जाए, बिजली की सप्लाई में समस्या आए, मीटर से आवाज या जलने जैसी गंध आए या बिल/ बैलेंस में साफ गड़बड़ी नजर आए तो खुद मीटर खोलने या छेड़छाड़ करने के बजाय बिजली विभाग से संपर्क करना चाहिए.

ईवी बैटरी की उम्र बढ़ाने की दिशा में भारतीय शोधकर्ताओं की बड़ी उपलब्धि, शोधकर्ताओं ने बनाया स्मार्ट पावर सिस्टम

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती लोकप्रियता के बीच उनकी सबसे बड़ी चुनौती बैटरी की उम्र है। अब बैटरी की उम्र बढ़ाने की दिशा में भारतीय शोधकर्ताओं ने महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी राउरकेला के शोधकर्ताओं ने ऐसी हाइब्रिड ऊर्जा भंडारण प्रणाली विकसित की है, जो अचानक ब्रेक लगाने, तेज गति से वाहन चलाने और गति कम–ज्यादा करने के दौरान बैटरी पर पड़ने वाले अतिरिक्त दबाव को कम कर सकती है।

इस तकनीक का पेटेंट भी हासिल कर लिया गया है। इस शोध को उच्च शिक्षण संस्थान एनआईटी राउरकेला की प्रो. मोनालिसा पटनायक, डॉ. प्रद्युम्न कुमार बेहरा और करण गुप्ता ने अंजाम दिया है। शोधकर्ताओं के मुताबिक नई प्रणाली का डिजाइन कम से कम घटकों पर आधारित है। इससे सिस्टम की जटिलता कम होती है और बैटरी को अचानक बढ़ने वाली बिजली की मांग से सुरक्षा मिलती है।

दरअसल शहरों में इलेक्ट्रिक वाहनों को बार–बार रुकना और चलना पड़ता है।इसके अलावा अचानक एक्सीलरेशन, डिसेलरेशन और ब्रेक लगाने जैसी स्थितियों में बैटरी से बहुत तेजी से करंट लिया या वापस भेजा जाता है। इससे बैटरी सेल्स पर थर्मल और विद्युत दबाव बढ़ता है और समय के साथ उनकी क्षमता तथा उम्र प्रभावित हो सकती है। इसी समस्या का समाधान निकालने के लिए शोधकर्ताओं ने बैटरी के साथ सुपरकैपेसिटर को जोड़ा है।

सुपरकैपेसिटर बहुत तेजी से चार्ज और डिस्चार्ज हो सकता है और अचानक पैदा होने वाली बिजली की मांग को संभाल सकता है। इससे बैटरी को तेज करंट के झटकों से राहत मिलती है और उसकी उम्र बढ़ाने में मदद मिलती है।

नई प्रणाली की खासियत इसका सरल डिजाइन है। प्रो. मोनालिसा पटनायक के मुताबिक इसमें तीन प्रमुख घटक हैं। एक घटक कन्वर्टर, एक इंडक्टर और एक सिंगल कंट्रोल सिस्टम है। एक ही कन्वर्टर बैटरी और सुपरकैपेसिटर

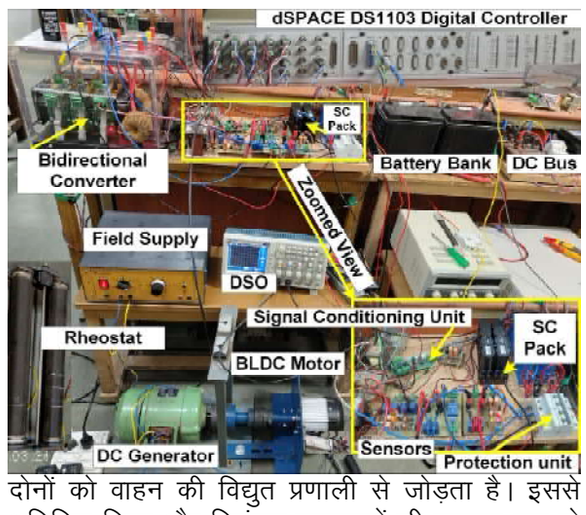

दोनों को वाहन की विद्युत प्रणाली से जोड़ता है। इससे अतिरिक्त स्विच और नियंत्रण उपकरणों की जरूरत कम हो जाती है। वहीं इंडक्टर करंट में अचानक होने वाले उछाल को नियंत्रित करता है। सिंगल कंट्रोल सिस्टम वाहन के तेज गति पकड़ने और गति कम करने, दोनों परिस्थितियों में बिजली के प्रवाह को नियंत्रित करता है।शोधकर्ताओं ने अचानक ब्रेक लगाने, तेज तेज और मंद गति जैसी परिस्थितियों में इस प्रणाली का परीक्षण किया। परीक्षण के दौरान सिस्टम ने 48 वोल्ट का स्थिर वोल्टेज बनाए रखा और बैटरी करंट में अचानक बदलाव को नियंत्रित करने में सफलता हासिल की।

सुपरकैपेसिटर ने भी अचानक पैदा होने वाली बिजली की जरूरत को प्रभावी ढंग से संभाला। प्रो. पटनायक के अनुसार यह प्रणाली 24 से 60 वोल्ट डीसी वाले कम–वोल्टेज इलेक्ट्रिक वाहन प्लेटफॉर्म के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। इसका इस्तेमाल इलेक्ट्रिक स्कूटर, इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल, ई–रिक्शा, कार्गो ट्राइसाइकिल और कैंपस या औद्योगिक उपयोगिता वाहनों में किया जा सकता है।

नेशनल रीड ए बुक डेः किताबों के साथ एक खास दिन

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

हर साल 6 सितंबर को अमेरिका में "नेशनल रीड ए बुक डे" मनाया जाता है। यह दिन खासतौर पर लोगों को किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के मकसद से बनाया गया है। आज के दौर में जब हर किसी का ज्यादातर समय मोबाइल, सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर बीत जाता है, ऐसे में यह दिन हमें एक बार फिर किताबों की दुनिया की ओर लौटने का मौका देता है।

पढ़ने की आदत सिर्फ मनोरंजन का जरिया नहीं है, बल्कि यह हमारी सोच, शब्दावली, कल्पनाशक्ति और समझ को भी बेहतर बनाती है। नेशनल रीड ए बुक डे का उद्देश्य हैः

लोगों में किताबें पढ़ने की आदत को फिर से जगाना

बच्चों और युवाओं को डिजिटल स्क्रीन से थोड़ा दूर करना

पढ़ने–लिखने की संस्कृति को बढ़ावा देना

साहित्य और लेखकों के काम को सम्मान देना

किताबें पढ़ने के फायदे

ज्ञान में वृद्धि : हर किताब एक नई जानकारी, नया नजरिया लेकर आती है।

तनाव कम होता है : पढ़ना दिमाग को शांत करता है और मानसिक थकान दूर करने में मदद करता है।

कल्पनाशक्ति बढ़ती है : खासकर कहानियां और उपन्यास हमारी सोचने की क्षमता को नई दिशा देते हैं।

भाषा और शब्दावली मजबूत होती है : नियमित पढ़ने से बोलने और लिखने का तरीका भी निखरता है।

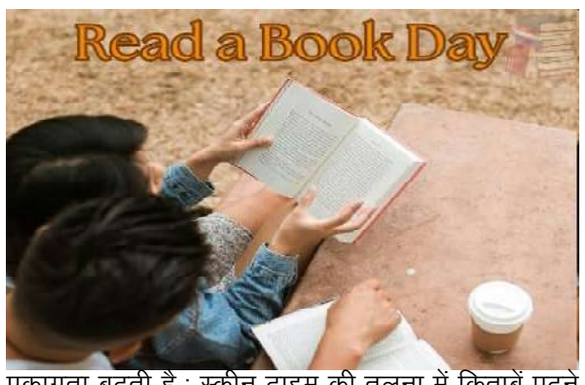

एकाग्रता बढ़ती है : स्क्रीन टाइम की तुलना में किताबें पढ़ने से ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बेहतर होती है।

आप इस दिन क्या कर सकते हैं?

अपनी पसंदीदा किताब को फिर से हाथ में उठाएं

किसी नई किताब की शुरुआत करें

बच्चों को साथ बिठाकर कहानी सुनाएं या पढ़ाएं

लाइब्रेरी या किताबों की दुकान पर जाएं

दोस्तों के साथ अपनी पसंदीदा किताब की सिफारिश शेयर करें

नेशनल रीड ए बुक डे हमें याद दिलाता है कि किताबें सिर्फ कागज के पन्ने नहीं, बल्कि नए विचारों, अनुभवों और दुनियाओं का द्वार हैं। इस दिन को सिर्फ एक तारीख के रूप में न देखें, बल्कि इसे एक आदत की शुरुआत बनाएं, रोज़ थोड़ा पढ़ने की आदत, जो जिंदगी भर साथ निभाए।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में मिला 3.65 अरब साल पुराना पत्थर, भारत की अब तक की सबसे पुरानी चट्टान बनी

बीजापुर, 05 सितंबर (हि.स.)।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के दक्षिण–पश्चिम में भोपालपट्टनम के जंगल की जमीन के नीचे मिली एक चट्टान को वैज्ञानिकों ने करीब 3.65 अरब वर्ष पुराना बताया है। यह खोज भारतीय भूभाग पर अब तक पहचाने गए सबसे पुराने चट्टानी अवशेष के रूप में सामने आई है।

चट्टान उस दौर की है, जब पृथ्वी अपनी शुरुआती पर्पटी यानी परत के निर्माण के चरण में थी। इस खोज से भारत के भूवैज्ञानिक इतिहास का रिकॉर्ड करीब 15 करोड़ वर्ष और पीछे चला गया है। इससे पहले झारखंड का सिंहभूम भारत के सबसे प्राचीन चट्टानी क्षेत्र के तौर पर लंबे समय से शीर्ष पर था। इससे पहले बस्तर में किए गए अध्ययनों में करीब 3.56 अरब वर्ष पुरानी चट्टानों की मौजूदगी सामने आई थी।

नई खोज ने इस रिकॉर्ड को लगभग 150 मिलियन यानी 15 करोड़ वर्ष पीछे कर दिया है। शोधकर्ताओं के अनुसार बस्तर की 3.64 से 3.60 अरब वर्ष पुरानी चट्टानें दुनिया में ज्ञात सबसे पुराने मैग्मैटिक चार्नोकाइट्स में शामिल हो सकती हैं। यह खोज शुरुआती पृथ्वी के भूवैज्ञानिक विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

यह खोज बिजापुर–भोपालपट्टनम कॉरिडोर के आस–पास हुई है। यह क्षेत्र बस्तर क्रेटन का हिस्सा है। क्रेटन महाद्वीपीय भू–पर्पटी का ऐसा प्राचीन हिस्सा होता है, जो करोड़ों वर्षों में टकराव, दबाव, दफन होने और पिघलने जैसी प्रक्रियाओं के बावजूद अस्तित्व में बना रहता है।

यह अध्ययन "पेट्रोक्रोनोलॉजिकल कॉस्ट्रेंट्स ऑन इओआर्चियन सबडक्शन : एविडेंस फ्रॉम द साउथवेस्ट बस्तर क्रैटन इंडिया शीर्षक से किया गया है। शोध में आईआईएसईआर भोपाल के प्रो. प्रीतम नासीपुरी और कौशिक सतपथी के साथ कोरिया बेसिक साइंस इंस्टीट्यूट के प्रो. कीवूक यी तथा पूर्व आईआईटी खडगपुर प्रोफेसर अभिजीत भट्टाचार्या शामिल रहे।

उक्त शोधकर्ताओं के अनुसार क्षेत्र में करीब 3.65 अरब वर्ष पहले एक प्रमुख भूवैज्ञानिक घटना हुई। इसके बाद 3.64 से 3.60 अरब वर्ष के बीच एक और चरण आया, जबकि 3.44 से 3.40 अरब वर्ष पहले चट्टानों के दोबारा सक्रिय या पुनर्गठित होने के प्रमाण मिले। अध्ययन में दो

अलग प्रकार की चट्टानों की पहचान की गई है। इनमें सबसे पुरानी नीस है, जो धारियों वाली चट्टान होती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक इसके स्वरूप में पृथ्वी के शुरुआती इतिहास में हुए जटिल बदलाव दर्ज हैं।

प्रो. प्रीतम नासीपुरी के अनुसार चट्टान गहराई में बनी, जहां इसे गर्म होने, आंशिक रूप से पिघलने और दोबारा बनने जैसी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ा। यह प्रक्रिया सतह से करीब 30 से 50 किलोमीटर नीचे और संभवतः 1,000 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पर हुई होगी। रासायनिक और समस्थानिक साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि 3.6 अरब वर्ष से भी पहले पृथ्वी पर सबडक्शन से जुड़ी प्रक्रियाएं सक्रिय हो सकती थीं। ये प्रक्रियाएं आधुनिक प्लेट टेक्टोनिक्स की शुरुआती पूर्वज मानी जा सकती हैं।

नेपाल में आपदा प्रभावित 84 हजार लोगों के लिए संयुक्त राष्ट्र जुटाएगा 5 करोड़ डॉलर

काठमांडू, 05 सितंबर (हि.स.)।

नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन से 84 हजार लोग प्रभावित हुए हैं और उन्हें तत्काल मानवीय सहायता की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) और उसके सहयोगी संगठनों ने प्रभावित समुदायों तक जरूरी मदद पहुंचाने के लिए करीब 5 करोड़ अमेरिकी डॉलर जुटाने की अपील की है। संयुक्त राष्ट्र ने मानवीय सहायता के साझेदार संगठनों से यह राशि उपलब्ध कराने की अपील की है। भोटेकोशी और त्रिशूली नदियों में आई बाढ़ तथा भूस्खलन से प्रभावित 84 हजार से अधिक लोगों तक जीवनरक्षक सहायता पहुंचाने के लिए यह अपील की गई है।

नेपाल में संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के मुताबिक, यह सहायता राशि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के नेतृत्व में नेपाल सरकार द्वारा तैयार की गई चार महीने की योजना को प्राथमिकता के आधार पर लागू करने में इस्तेमाल की जाएगी। यह योजना सर्दी शुरू होने से पहले प्रभावित लोगों तक जरूरी सहायता पहुंचाने के लिए बनाई गई है।

संयुक्त राष्ट्र और उसके मानवीय सहायता साझेदार संगठन नेपाल सरकार द्वारा संचालित बचाव और राहत अभियान के साथ समन्वय करते हुए काम कर रहे हैं। नेपाल में संयुक्त राष्ट्र की आवासीय समन्वयक लीला पीटर्स याहिया ने एक बयान जारी करते हुए बताया कि इस सहायता अपील की मुख्य प्राथमिकता सरकार के नेतृत्व में सर्दी शुरू होने से पहले सबसे दुर्गम बस्तियों तक आश्रय, चिकित्सा सुविधा, स्वच्छ पानी और नकद सहायता पहुंचाना है।

संयुक्त राष्ट्र ने बताया कि इस सहायता के जरिए सबसे ज्यादा प्रभावित इलाकों में लोगों तक नकद सहायता, भोजन, आश्रय, स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य सेवाएं और अन्य जीवनरक्षक सामग्री पहुंचाई जाएगी। यूएन और उसके साझेदार नेपाल सरकार के साथ समन्वय कर आपदा प्रभावित लोगों तक तत्काल राहत पहुंचाने के प्रयास में जुटे हैं। विशेष रूप से सबसे ज्यादा तबाह और दुर्गम समुदायों तक जरूरी सहायता पहुंचाना इस अभियान की प्राथमिकता है।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा

नई दिल्ली, 05 सितंबर। पश्चिम एशिया में जारी संकट और वैश्विक उथल–पुथल के बीच जीडीपी के बाद अब विदेशी मुद्रा भंडार ने नया रिकॉर्ड बनाया है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 28 अगस्त को समाप्त हफ्ते में 11.47 अरब डॉलर उछलकर 740.80 अरब डॉलर के नये सर्वकालिक रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया है। आरबीआई ने शुक्रवार को जारी आंकड़ों में बताया कि इसके एक हफ्ते पहले देश का विदेशी मुद्रा भंडार 12.42 अरब डॉलर बढ़कर 729.39 अरब डॉलर रहा था, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड था। इससे पहले 27 फरवरी को समाप्त हफ्ते में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 728.49 अरब डॉलर के तत्कालीन सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था।

'गूंजा–सा है कोई एकतारा...' सिर्फ एक शब्द नहीं, सूखी लौकी से बने इस वाद्ययंत्र की दिलचस्प है कहानी

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

रणबीर कपूर का गाना 'गूंजा–सा है कोई एकतारा, एकतारा...' आपने जरूर सुना होगा। ये गाना सुनकर दिल खुश हो जाता है, लेकिन क्या आप जानते हैं इसमें इस्तेमाल होने वाला एकतारा क्या है? दरअसल, इस गाने में जिस इकतारे की बात हो रही है, वो भारत के सबसे पुराने वाद्य यंत्रों में से एक है।

एकतारा शब्द एक और तार से मिलकर बना है। इसका मतलब होता है एक तार वाला यंत्र। माना जाता है कि एकतारा बजाने की शुरुआत भारत के लोक संगीत और घुमंतू भिक्षुओं ने की थी। प्राचीन काल में घुमंतू गायक, ऋषि–मुनि और संतों को एक ऐसी चीज की जरूरत थी, जिसका वजन हल्का हो और यात्रा के दौरान आसानी से साथ लेकर जाया जा सके। इसी तरह एकतारा का आविष्कार हुआ और संगीत की दुनिया में इसने अपनी जगह बनाई।

कुछ लोग मानते हैं कि इस वाद्य यंत्र की शुरुआत 12वीं सदी में हुई थी, लेकिन कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि ये इससे पहले भी पाया जाता था। मीराबाई, कबीरदास और बंगाल के बाउल गायकों ने अपने भजनों और सूफी गीतों में एकतारा का खूब इस्तेमाल किया। इसलिए इसे भगवान से जुड़ने और आध्यात्मिक लय बनाए रखने का एक जरिया माना जाने लगा।

एकतारा में सिर्फ एक ही तार का इस्तेमाल किया जाता है, जो गायक को सुर देने के लिए बजाया जाता है। इसकी तार को उंगली या नाखुन से छेड़ा जाता है, जिससे लगातार एक गूंजती हुई आवाज पैदा होती है।

एकतारा का इस्तेमाल उत्तर भारत, बंगाल और पंजाब के

लोक संगीत में खूब होता है। साथ ही, सूफी गायन, कव्वाली और भजनों में भी एकतारा बजाया जाता है। एकतारा का इस्तेमाल सिर्फ प्राचीन भारत में नहीं होता था। आज के म्यूजिक में भी आपको एकतारा की धुन सुनने को मिल जाएगी।

एकतारा घुमंतू साधुओं का वाद्य यंत्र था। इसलिए इसे बहुत ही कम खर्च में आसानी से बनाया जा सकता है। इसका निचला हिस्सा, जिसे रेजोनेटर कहते हैं, सूखी लौकी या उसके जैसे किसी दूसरे मटीरियल से बनाया जाता है। इसके ऊपर बकरे या जानवर की चमड़ी मढ़ी जाती है, जिससे इसका आवाज और उभर कर आती है।

इसका ऊपरी हिस्सा बांस की लकड़ी से बना होता है। एक बास को बीच से काटा जाता है, जो एकतारा की गर्दन का काम करता है। इसके बीच में लोहे या पितल की एक तार लगी होती है, जिसका एक हिस्सा नीचे की चमड़ी से जुड़ा होता है और ऊपरी हिस्सा बांस की लकड़ी से लगी एक खूंटी से। इस खूंटी को घुमाकर तार को बढ़ाया या घटाया जाता है, ताकि सही सुर मिल सके।

इतिहास के पन्नों में 06 सितम्बरः भारत ने पाकिस्तान के 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' और 'ऑपरेशन ग्रैंड स्लैम' का मुंहतोड़ जवाब दिया

नई दिल्ली, 05 सितम्बर (हि.स.)।

6 सितंबर 1965 को भारत–पाकिस्तान युद्ध एक बड़े पैमाने के पारंपरिक युद्ध में बदल गया, जब भारतीय सेना ने पहली बार अंतरराष्ट्रीय सीमा पार कर पश्चिमी पाकिस्तान पर हमला किया। यह कदम पाकिस्तान के 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' (कश्मीर में घुसपैठ) और 'ऑपरेशन ग्रैंड स्लैम' (अखनूर सेक्टर पर हमला) का मुंहतोड़ जवाब था। जम्मू–कश्मीर पर बढ़ते दबाव को कम करने के लिए भारतीय नेतृत्व ने लाहौर, सियालकोट और राजस्थान सीमा की ओर तीनतरफा सैन्य अभियान शुरू किया। इस अचानक हमले से पाकिस्तानी सेना को अपनी रणनीति बदलकर लाहौर की रक्षा में जुटना पड़ा। इसी दिन पाकिस्तान में आपातकाल की घोषणा की गई थी। यह ऐतिहासिक कदम भारत की सैन्य रणनीति में एक बड़ा बदलाव था, जिसके बाद द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की सबसे बड़ी टैंक लड़ाई (जैसे असल उत्तर का युद्ध) लड़ी गई।

महत्वपूर्ण घटनाचक्र 1522 : पुर्तगाली खोजी यात्री फर्डिनेंड मैगलन के अभियान का जहाज 'विक्टोरिया' स्पेन लौटा, जिससे दुनिया की पहली सफल समुद्री परिक्रमा पूरी हुई।

1657: शाहजहाँ की बीमारी और उत्तराधिकार का युद्ध।

1776: कैरेबियाई क्षेत्र के ग्वाडेलोप द्वीप में एक भयानक चक्रवाती तूफान ने 6,000 से अधिक लोगों की जान ले ली।

1901: अमेरिका के राष्ट्रपति विलियम मैकिनले को न्यूयॉर्क में एक अराजकतावादी ने गोली मार दी, जिससे कुछ दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई।

1914: फ्रांस और जर्मनी के बीच ऐतिहासिक मार्ने का युद्ध शुरू हुआ, जिसने जर्मन सेना के बढ़ते कदमों को रोका।

1916: क्लेरेंस सैंडर्स ने अमेरिका के मेम्फिस में 'पिगली

विगली' नाम से दुनिया का पहला सेल्फ–सर्विस ग्रोसरी स्टोर खोला।

1924 : इटली के तानाशाह बेनितो मुसोलिनी की हत्या का प्रयास विफल। वह एक हमले में बाल–बाल बच गए।

1939 : नाजी जर्मनी के बढ़ते आक्रामक कदमों को देखते हुए दक्षिण अफ्रीका ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।

1965 : भारतीय सेना ने पाकिस्तान के खिलाफ पंजाब और राजस्थान मोर्चे पर बड़े पैमाने पर सैन्य अभियान छेड़ा और लाहौर की ओर तेजी से कदम बढ़ाए।

1968 : दक्षिण अफ्रीकी देश स्वाजीलैंड (अब इस्वातीनी) को ब्रिटेन से पूर्ण स्वतंत्रता मिली।

1997 : पेरिस में एक कार दुर्घटना में मारी गईं ब्रिटेन की प्रिंसेस डायना का अंतिम संस्कार लंदन के वेस्टमिंस्टर एबे में हुआ।

2018 : भारत के उच्चतम न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले में धारा 377 को आंशिक रूप से रद्द कर दिया, जिससे वयस्कों के बीच परस्पर सहमति से समलैंगिक संबंधों को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया गया।

बाल विवाह के खिलाफ भारत की लड़ाई को यूएन का समर्थन, 27 नवंबर को 'अंतरराष्ट्रीय दिवस' घोषित किया

नई दिल्ली, 05 सितम्बर

बाल विवाह के खिलाफ भारत की लड़ाई को वैश्विक स्तर पर बड़ी मान्यता मिली है। संयुक्त राष्ट्र ने 27 नवंबर को 'बाल, कम उम्र और जबरन विवाह को समाप्त करने के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस' घोषित किया है। भारत के लिए यह तारीख खास तौर पर महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी दिन 2024 में भारत सरकार ने 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान की शुरुआत की थी।

'जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रन' (जेआरसी) के संस्थापक भुवन रिभु ने बाल विवाह को खत्म करने के लिए एक खास ग्लोबल डे मनाने की अंतरराष्ट्रीय मांग शुरू की थी। मार्च 2026 में संयुक्त राष्ट्र में अपने भाषण के दौरान भुवन रिभु ने अंतरराष्ट्रीय नेताओं की मौजूदगी में यूएन प्रस्ताव की मांग को फिर से दोहराया। इस दौरान अफ्रीकी देश सिएरा लियोन की फर्स्ट लेडी डॉ. फातिमा माडा बायो भी मौजूद थीं और उन्होंने इस पहल का समर्थन किया। इसके बाद, सिएरा लियोन ने भारत समेत लगभग 50 देशों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रस्ताव पेश करके इस कोशिश का नेतृत्व किया। इस प्रस्ताव में 27 नवंबर को बाल विवाह खत्म करने के लिए समर्पित एक अंतरराष्ट्रीय दिवस के तौर पर घोषित करने की मांग की गई थी। 4 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र ने यह प्रस्ताव पारित कर दिया।

संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव का स्वागत करते हुए 'जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रन' के संस्थापक भुवन रिभु ने कहा, "आज भारत बाल संरक्षण के मामले में विश्वगुरु है। भारत ने 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान सबसे पहले बच्चों और समुदायों ने शुरू किया था और जिसे बाद में सरकार का समर्थन और विस्तार मिला। अभियान के तहत 25 करोड़ से अधिक लोग एक साथ आए और 27 नवंबर 2024 को संकल्प लिया, वह आज दुनिया द्वारा स्वीकार किया गया एक अंतरराष्ट्रीय दिवस बन गया है। यह सभी भारतीयों के लिए बहुत गर्व का क्षण है और मैं उन बच्चों, समुदाय के नेताओं, धर्मगुरुओं और विशेष रूप से अपने एनजीओ सहयोगियों को बधाई और धन्यवाद देना चाहता हूं जिनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने आज के दिन को संभव बनाया। मैं विशेष रूप से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी के नेतृत्व में भारत सरकार का उनके निर्णायक नेतृत्व और प्रतिबद्धता के लिए उल्लेख और धन्यवाद करना चाहता हूं। दुनिया हमारी ओर देख रही है, और हमारा काम तो अभी शुरू ही हुआ है।"

उन्होंने आगे कहा, "आज का दिन एक अहम मोड़ है, जो दिखाता है कि बाल विवाह के अपराध का अंत निश्चित और जल्द होने वाला है। अब समय आ गया है कि दुनिया भर की सरकारें 2030 तक बाल विवाह को खत्म करने के लिए निर्णायक नेतृत्व करें और हर बच्चे की पूरी क्षमता को साकार करने के लिए उनकी शिक्षा, सुरक्षा और विकास सुनिश्चित करें। मैं सिएरा लियोन की फर्स्ट लेडी का इस मुहिम को आगे बढ़ाने में उनके नेतृत्व के लिए आभारी हूं और उन 67 देशों को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने हमारे प्रस्ताव को सह–प्रायोजित किया।"

हाल के राष्ट्रीय आंकड़े भी बाल विवाह में कमी को दर्शाते हैं। 2019–21 के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस– 5) के अनुसार, 20–24 वर्ष की आयु की 23.3 फीसदी लड़कियों की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले हो गई थी, जबकि 2023–24 में यह आंकड़ा 20.1 फीसदी था। भारत सरकार ने 2026 तक बाल विवाह के प्रचलन को 10 फीसदी तक कम करने का लक्ष्य रखा है। राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर लगातार प्रयासों से उम्मीद है कि 2026 के अंत तक भारत में बाल विवाह का प्रचलन 15 फीसदी से नीचे आ जाएगा। 2030 तक बाल विवाह को खत्म करने की वैश्विक प्रतिबद्धता, सतत विकास लक्ष्य 5 (लैंगिक समानता) के लक्ष्य 5.3 के अनुरूप है, जो बाल विवाह, कम उम्र में विवाह और जबरन विवाह सहित सभी हानिकारक प्रथाओं को खत्म करने का आह्वान करता है।

भारत ने अपनी कोशिशों को अपनी सीमाओं से आगे बढ़ाया है। 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान से प्रेरित होकर जेआरसी की कोशिशों से दिसंबर 2024 में 'बाल विवाह मुक्त नेपाल' अभियान शुरू किया गया। तब से यह आंदोलन 99 से अधिक देशों में फैल चुका है और 25 करोड़ से ज़्यादा लोगों ने इस दिशा में काम करने का संकल्प लिया है।"(इनपुट–आईएएनएस)

सरकार ने पेट्रोलियम आईएसओ टैंक परिवहन के लिए तीन साल के परमिट और सख्त सुरक्षा नियमों का प्रस्ताव रखा

नई दिल्ली, 05 सितम्बर (एएनआई)।

सरकार ने पेट्रोलियम नियम, 2002 में प्रस्तावित संशोधनों के भाग के रूप में आईएसओ टैंक कंटेनरों में पेट्रोलियम के आयात और परिवहन के लिए तीन वर्ष तक की अनुमति देने तथा पूर्ण आवेदनों के लिए सात कार्य दिवस की स्वीकृति प्रणाली शुरू करने का प्रस्ताव किया है। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने गुरुवार को एक मसौदा अधिसूचना जारी की, जिसमें पेट्रोलियम (संशोधन) नियम, 2026 का प्रस्ताव किया गया। मंत्रालय ने मसौदे पर आपत्तियां और सुझाव आमंत्रित किए हैं, जिन पर राजपत्र की प्रतियां जनता के लिए उपलब्ध कराए जाने की तारीख से 30 दिनों की समाप्ति के बाद विचार किया जाएगा।

प्रस्तावित परिवर्तनों के तहत, किसी भी व्यक्ति को मुख्य नियंत्रक या नियंत्रक से अनुमति प्राप्त किए बिना पेट्रोलियम से भरे या भरे जाने वाले आईएसओ टैंक कंटेनर को आयात करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। आवेदन पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन (पीईएसओ) के ऑनलाइन लाइसेंसिंग पोर्टल के माध्यम से निर्दिष्ट तकनीकी एवं सुरक्षा दस्तावेजों के साथ प्रस्तुत किए जाने होंगे।

मसौदे में प्रस्ताव है कि आयात अनुमतियाँ अधिकतम तीन वर्षों के लिए वैध हो सकती हैं। यदि आवेदन पूर्ण हो और उसके साथ सभी आवश्यक दस्तावेज संलग्न हों, तथा सात कार्य दिवसों के भीतर ऑनलाइन लाइसेंसिंग पोर्टल के माध्यम से कोई कमी या लिखित आपत्ति की सूचना न दी जाए, तो अनुमति प्रदान कर दी गई मानी जाएगी। आईएसओ टैंक कंटेनरों के आयात और भारत के

भीतर सड़क मार्ग से क्लास ए या क्लास बी पेट्रोलियम के परिवहन की संयुक्त अनुमति भी तीन साल तक के लिए वैध हो सकती है। प्रस्तावित संशोधन मौजूदा एक साल की परिवहन अनुमति को तीन साल की अवधि से भी बदल देंगे। जहां आवधिक या जल–परीक्षण प्रमाणपत्र वैध रहता है, वहां परिवहन अनुमति को तीन वर्ष तक या प्रमाणपत्र की समाप्ति तक, जो भी पहले हो, बढ़ाया जा सकता है।

मसौदे में अतिरिक्त रूप से आईएसओ टैंक कंटेनरों में पेट्रोलियम ले जाने वाले वाहनों के लिए सुरक्षा आवश्यकताओं को निर्धारित करने वाली एक नई छठी अनुसूची का प्रस्ताव है। पेट्रोलियम परिवहन के दौरान वाहनों में कम से कम दो व्यक्तियों के साथ जिम्मेदार कर्मियों की उपस्थिति आवश्यक होगी, तथा वाहनों में कम से कम नौ लीटर का पोर्टेबल अग्निशामक यंत्र, तेलरोधी नली और विद्युत बंधन केबल ले जाने की आवश्यकता होगी।

मंत्रालय ने जिला अग्निशमन अधिकारियों के लिए पूछताछ पूरी करने तथा लागू पेट्रोलियम लाइसेंसों के लिए अनापत्ति प्रमाण–पत्र जारी करने या अस्वीकार करने के लिए एक महीने की समयसीमा का भी प्रस्ताव किया है। मसौदा संबंधित सक्षम प्राधिकारी की सहमति के अधीन, कुछ अधिसूचित बंदरगाह, हवाई अड्डे, रेलवे, इसरो और परमाणु ऊर्जा विभाग क्षेत्रों के लिए ऐसे एनओसी से छूट प्रदान करता है।

प्रस्तावित परिवर्तनों को यदि अंतिम रूप दे दिया जाता है, तो पेट्रोलियम आयातकों और ट्रांसपोर्टरों को तकनीकी, निरीक्षण और सुरक्षा आवश्यकताओं को बरकरार रखते हुए लंबी परमिट वैधता और अधिक समयबद्ध नियामक प्रक्रियाएं मिलेंगी। (एएनआई)

केन्द्रीय परिवार कल्याण राज्य मंत्री ने कहा–मानसिक स्वास्थ्य समग्र स्वास्थ्य और कल्याण का अनिवार्य हिस्सा

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य समग्र स्वास्थ्य और कल्याण का एक अनिवार्य हिस्सा है और उत्पादकता एवं जीवन की गुणवत्ता से इसका गहरा संबंध है।

श्रीमती पटेल ने नई दिल्ली में एक समाचार पत्रिका द्वारा आयोजित 'युवा भारत का मानसिक स्वास्थ्य सम्मेलन' को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की एक चौथाई आबादी युवाओं और किशोरों की है और उनका अच्छा स्वास्थ्य ही भविष्य में देश की प्रगति की दिशा तय करेगा। उन्होंने कहा कि इस आयु वर्ग में तेजी से बढ़ती मानसिक बीमारियां गंभीर चिंता का विषय हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने इस चुनौती से निपटने के लिए राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम को गति दी है।

केन्द्रीय मंत्री ने बताया कि आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता और जांच की व्यवस्था की गई है। इसके अतिरिक्त टेली–मानस हेल्पलाइन शुरू की गई है, जो चौबीसों घंटे सभी के लिए उपलब्ध है। श्रीमती पटेल ने समाज से इस चुनौती से निपटने और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ–साथ इससे जुड़े सामाजिक कलंक को तोड़ने में योगदान देने के लिए एकजुट होने का आग्रह किया।

यूनेस्को विश्व धरोहर में शामिल होगी असम की अहोम सभ्यता, भारत ने किया नामांकन

गुवाहाटी, 05 सितंबर (हि.स.)।

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने शनिवार को कहा कि अहोम राजवंश की ऐतिहासिक राजधानी रंगपुर–शिवसागर को यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा दिलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाया गया है।

मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पोस्ट में बताया कि भारत की ओर से बीते 19 जून, 2026 को पेरिस स्थित यूनेस्को में भारत के स्थायी प्रतिनिधिमंडल ने रंगपुर–शिवसागर एन्सेम्बल को यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा देने के लिए औपचारिक रूप से नामांकन प्रस्तुत किया। यह नामांकन यूनेस्को के मानदंड (iii) और (iv) के तहत किया गया है।

अहोम राजवंश ने ब्रह्मपुत्र घाटी पर करीब छह शताब्दियों तक लगातार शासन किया था। रंगपुर–शिवसागर परिसर में अहोम काल की उत्कृष्ट स्थापत्य और इंजीनियरिंग विरासत मौजूद है, जिसमें रंगघर, कारेंगघर, ऐतिहासिक मंदिर, तालाब और अन्य महत्वपूर्ण संरचनाएं शामिल हैं। मुख्यमंत्री के अनुसार, रंगघर एशिया के सबसे पुराने जीवित एम्फीथिएटरों में से एक है।

डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने कहा कि यह पहल अहोम सभ्यता के गौरवशाली इतिहास को विश्व मंच पर और अधिक प्रमुखता से स्थापित करेगी। वर्ष 2024 में चराइदेव

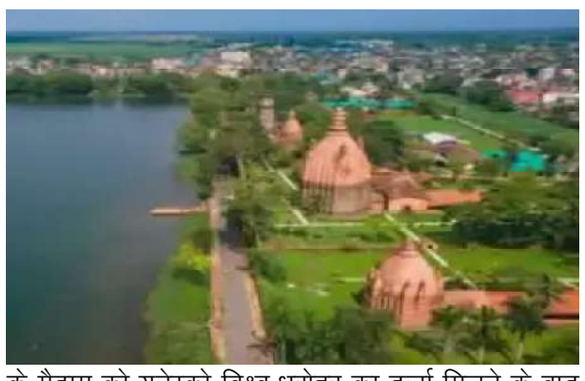

के मैदाम को यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा मिलने के बाद यह कदम अहोम विरासत को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

उन्होंने कहा कि चराइदेव अहोम राजवंश की स्मृतियों को संजोए हुए है, जबकि शिवसागर उनके शासन की गौरवगाथा को दर्शाता है। दोनों स्थल मिलकर असम के अहोम इतिहास की समृद्ध कहानी को पूर्ण करते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने असम की विरासत को वैश्विक पहचान दिलाने के प्रयासों के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति राज्य की जनता की ओर से आभार व्यक्त किया।

भारत की इकलौती फ्री ट्रेनः न कोई टीटीई और न ही लगता है कोई किराया, जानिए इसका इतिहास

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

भारत को दुनिया का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क वाला देश माना है। जिसकी कुल लंबाई लगभग 1,15,000 किलोमीटर है। देश के कोने–कोने को आपस में जोड़ने वाली इन ट्रेनों में हर दिन 13,000 से अधिक ट्रेनें संचालित होती हैं, जिनमें रोजाना करीब 2 करोड़ 31 लाख लोग सफर करते हैं। सफर चाहे छोटा हो या बड़ा, यात्रियों को तय नियमों के तहत अपनी यात्रा का किराया चुकाना ही पड़ता है। आधुनिकता के इस दौर में जहां ट्रेन का सफर महंगा होता जा रहा है, वहीं हमारे देश में आज भी एक ऐसी अनूठी ट्रेन चलती है, जिसमें पिछले 75 सालों से एक भी रुपया किराया नहीं लिया जाता है।

जी हाँ, यह सुनने में भले ही हैरान करने वाला लगे, लेकिन यह बिल्कुल सच है। पंजाब और हिमाचल प्रदेश की सीमा पर चलने वाली यह ऐतिहासिक ट्रेन बिना किसी टिकट और बिना किसी शुल्क के यात्रियों को मुफ्त सेवा दे रही है। इस ट्रेन में न तो कोई टीटीई होता है और न ही यात्रियों पर टिकट दिखाने का कोई दबाव। अपनी इसी अद्भुत खासियत और ऐतिहासिक महत्व के कारण यह ट्रेन पिछले सात दशकों से लोगों के बीच आकर्षण का बड़ा केंद्र बनी हुई है। तो आइए, आज इस लेख के माध्यम से जानते हैं इस अनोखी ट्रेन के इतिहास, इसकी कार्यप्रणाली और इससे जुड़ी तमाम दिलचस्प बातों के बारे में विस्तार से।

दरअसल हम बात कर रहे हैं, भाखड़ा–नांगल ट्रेन की जो 75 सालों से लगातार यात्रियों को मुफ्त सेवा देती आ रही है, यह ट्रेन दो राज्यों बीच गुजरती है। यह लगभग 13 किलोमीटर की दूरी तय करती है, यात्रा के दौरान आपको रास्तों में पहाड़ों के बीच मनमोहक नजारे देखने को मिलते हैं

आपको बता दें कि यह ट्रेन भाखड़ा– नांगल के बीच चलती है। जिसके अंतर्गत पंजाब और हिमाचल प्रदेश दोनों राज्य आते हैं। इस ट्रेन में दोनों राज्यों के यात्री सफर करते हैं। यह ट्रेन भारतीय रेलवे के द्वारा नहीं चलती। इस ट्रेन

को भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड संचालित करता है।

इस रेलवे लाइन को साल 1948 में भाखड़ा–नांगल डेम के निर्माण के समय बनाया गया था, जिसमें डेम निर्माण में लगने वाले सामानों और को लाया जाता था। जिसमें लोहा पत्थर बड़ी–बड़ी मिशनों और डेम बनाने में काम कर रहे लोगों आते जाते थे। कुछ समय बाद जब डेम पुरी तरह से बन गया। इसके बाद भी ने ट्रेन को स्थानीय लोगों को आने –जाने के लिए खोल दिया।

जानकारी के मुताबिक आपको बता दें की इस ट्रेन में रोजाना लगभग 800 से ज्यादा लोग यात्रा करते हैं। खास बात यह है कि इस ट्रेन में कोई भी टीटीई नहीं रहता और ना ही लोगों से किसी तरह का भी किराया लिया जाता है। यह ट्रेन प्रतिदिन सुबह 7.05 बजे नांगल से चलती है और 8. 20 बजे भाखड़ा पहुंचती है। और वापसी में दोपहर 3.05 बजे नांगल से चलेगी और शाम 4.20 बजे भाखड़ा पहुंचती है। जो यात्रियों के लिए बहुत ही आरामदायक मानी जाती है।

बता दें कि 75 सालों से मुफ्त सेवा दे रही यह ट्रेन प्रतिदिन 13 किलोमीटर की दूरी तय करती है। ट्रेन में पूरी तरह से डीजल इंजन लगा हुआ है। और इसके कोच लकड़ी के बने हुए है। जिसमें गांव के लोग, स्कूली बच्चे, रोजाना सफर करते हैं और यह ट्रेन स्थानीय लोगों के लिए परिवहन का एक मुख्य साधन है।

क्यों एक तारीफ पूरी जिंदगी याद रहती है और एक डांट भी? समझिए क्या है 'टीचर इफेक्ट' का माइंड गेम

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

इंसानी दिमाग की सबसे बड़ी खासियत ही यही है कि वह किसी की कही गई बात को सालों साल और कई बार तो जिंदगी भर याद रख सकता है। इसमें भी अगर टीचर ने कोई सीख दी हो या डांट लगाई हो तो इसका प्रभाव जिंदगी भर रह सकता है जिसे आसान भाषा में टीचर इफेक्ट और साइकोलॉजी की दुनिया में पिग्मेलियन इफेक्ट कहते हैं।

टीचर इफेक्ट शिक्षा शास्त्र और मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण विचार है, जो कहता है कि किसी टीचर के गुण, व्यवहार और पढ़ाने का स्टाइल स्टूडेंट के भविष्य पर गहरा प्रभाव डालता है। इसे उदाहरण से समझें तो अगर टीचर अपने किसी स्टूडेंट से ज्यादा उम्मीदें रखता है तो उसका प्रदर्शन भी उतना ही बेहतरीन होता है। हालांकि इस थ्योरी का जन्म क्लासरूम में हुआ लेकिन इसका उपयोग मैनेजमेंट, बिजनेस और स्पोर्ट्स साइकोलॉजी में किया जा रहा है।

इसी तरह टीचर यानी पिग्मेलियन इफेक्ट का असर विद्यार्थी के दिमाग पर बहुत गहरा पड़ता है। तभी तो टीचर के तारीफ किए जाने या डांट लगाने पर भी यह बात जिंदगी भर याद रहती है। सिर्फ याद ही नहीं रहती, बल्कि हमारा दिमाग इसे सच भी मानने लगता है। इसे ही साइकोलॉजी की भाषा में आत्म–पूर्ति भविष्यवाणी यानी सेल्फ फुलफिलिंग भविष्यवाणी कहा जाता है।

मान लीजिए कि टीचर ने क्लास में किसी बच्चे को कहा

कि 'तुम बहुत होनहार हो', बच्चा इसे सच मानकर वैसा ही बनने की कोशिश में लग जाता है। जबकि अगर शिक्षक इसके उलट यह कहे कि 'तुम्हें कुछ नहीं आता' तो यह भी बच्चे के लिए भविष्यवाणी जैसा होता है, जिसका असर उसकी आगे की जिंदगी पर देखने को मिलता है।

टीचर इफेक्ट को अमेरिकी शिक्षाविदों रॉबर्ट रोसेन्थल और लेनोर जैकबसन ने पहली बार साल 1965 में पहचाना था। यही वजह है कि इसका तीसरा नाम रोसेन्थल इफेक्ट भी है। उनका मानना था कि किसी छात्र की बौद्धिक क्षमताओं को बढ़ाने या घटाने में शिक्षक की सकारात्मक और नकारात्मक अपेक्षाएं बड़ी भूमिका निभाती हैं। यह इफेक्ट साफतौर पर बताता है कि कैसे दूसरों का व्यवहार और अपेक्षाएं किसी व्यक्ति की क्षमता को सीधे तौर पर प्रभावित करती है।

आंतों की सेहत सुधारने के लिए खाएं ये 10 प्रीबायोटिक फूड्स, लहसुन और ओट्स भी शामिल

नई दिल्ली, 05 सितम्बर।

शरीर को स्वस्थ रखने में आंतों की सेहत बेहद जरूरी है। पाचन तंत्र में मौजूद गुड बैक्टीरिया को पोषण देने में प्रीबायोटिक फूड्स मददगार होते हैं। प्रीबायोटिक्स ऐसे पोषक तत्व होते हैं, जिन्हें हमारी आंतों में मौजूद गुड बैक्टीरिया इस्तेमाल करते हैं। खासतौर पर कुछ तरह के फाइबर रिच फूड इस कैटेगरी में आते हैं। रोज के भोजन में कई ऐसे खाद्य पदार्थ आसानी से शामिल किए जा सकते हैं, जो प्राकृतिक रूप से प्रीबायोटिक फाइबर से भरपूर होते हैं।

लहसुन में इन्यूलिन और फ्रुक्टान जैसे प्रीबायोटिक घटक पाए जाते हैं, जो आंतों में मौजूद लाभकारी बैक्टीरिया के लिए भोजन का काम करते हैं।

प्याज में इन्यूलिन और फ्रुक्टो–ओलिगोसैकराइड्स (एफओएस) जैसे फाइबर पाए जाते हैं। इन्हें भोजन में शामिल करना आंतों के माइक्रोबायोम के लिए फायदेमंद होता है।

लीक प्याज और लहसुन फैमिली की ही एक सब्जी है और इसमें प्रीबायोटिक फाइबर पाया जाता है। इसे सूप, सब्जी या सलाद में शामिल किया जा सकता है।

शतावरी यानी एस्पैरेगस इन्यूलिन जैसे प्रीबायोटिक फाइबर का स्रोत है। यह आहार में फाइबर बढ़ाने का एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

थोड़े कच्चे केले में रेजिस्टेंट स्टार्च अधिक पाया जाता है, जो प्रीबायोटिक की तरह काम करता है और आंतों के लाभकारी बैक्टीरिया को पोषण देता है।

चिकोरी की जड़ इन्यूलिन का समृद्ध स्रोत मानी जाती है। इन्यूलिन आंतों में मौजूद अच्छे बैक्टीरिया के लिए प्रीबायोटिक फाइबर का काम करता है।

ओट्स में बीटा–ग्लूकन नामक सॉल्यूबल फाइबर पाया जाता है। यह आंतों के लाभकारी बैक्टीरिया को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

सेब में पेक्टिन नामक घुलनशील फाइबर होता है, जिसमें प्रीबायोटिक गुण पाए जाते हैं। छिलके समेत सेब खाने पर फाइबर की मात्रा और बढ़ जाती है।

जौ बीटा–ग्लूकन और अन्य फाइबर का अच्छा स्रोत है। यह आंतों के माइक्रोबायोम में लाभकारी बैक्टीरिया के लिए पोषण उपलब्ध कराने में मदद करता है।

अलसी में भरपूर फाइबर और ओमेगा–3 फैटी एसिड होते हैं, जो पाचन को बेहतर रखने और आंतों के स्वास्थ्य को सहारा देते हैं। नियमित मात्रा में अलसी का सेवन आंतों में अच्छे बैक्टीरिया के लिए अनुकूल वातावरण बनाता है।